

धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान एवं पुरस्कारों की स्थापना

चर्चा में क्यों?

7 मार्च, 2023 को मध्य प्रदेश की संस्कृति, पर्यटन और धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व मंत्री ऊषा ठाकुर ने बताया कि प्रदेश के संस्कृति विभाग द्वारा स्वराज संस्थान संचालनालय के अधीन धर्मपाल शोधपीठ के अंतर्गत 5 लाख रुपए का एक धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान एवं दो-दो लाख प्रति पुरस्कार के तीन धर्मपाल राष्ट्रीय पुरस्कार स्थापित किये जा रहे हैं।

प्रमुख बटु

- उल्लेखनीय है कि आज़ादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत वख्यात चितिक, इतिहासकार एवं वचारक धर्मपाल के जन्म शताब्दी वर्ष पर यह नरिणय लयिा गया है।
- प्रदेश की संस्कृति, पर्यटन और धर्मस्व मंत्री ऊषा ठाकुर ने बताया कि धर्मपाल राष्ट्रीय सम्मान में भारतीय इतिहास, शकिषा एवं धर्मपाल के वचारों के प्रतिपादन के लयिे कयिे गए उल्लेखनीय कार्य एवं योगदान हेतु व्यक्त/संस्था को सम्मानति कयिा जाएगा।
- इसके अलावा आधुनकि भारत के राजनीतिक, सामाजकि और आर्थकि इतिहास पर मौलकि कार्य, ऐतिहासकि दस्तावेज़ों के संरक्षण, पररिक्षण, दस्तावेज़ीकरण, अनुवाद, प्रचार-प्रसार और ग्राम स्वराज, ग्रामीण वकिास, सामाजकि सरोकार एवं स्वदेशी जैसे भारतीय वचारों के करयिान्वयन के क्षेत्र में सकरयिे व्यक्तयिों एवं संस्थाओं को धर्मपाल राष्ट्रीय पुरस्कारों से पुरस्कृत कयिा जा सकेगा।
- ऊषा ठाकुर ने बताया कि वर्ष 2022-23 में 6 लाख रुपए की 5 सीनयिर फ़ैलोशिपि तथा 4 लाख 32 हज़ार रुपए की सात जूनयिर फ़ैलोशिपि भी घोषति की गई है।
- पाँच सीनयिर फ़ैलोशिपि के लयिे आमंत्रति प्रस्तावों में 18वीं शताब्दी का भारत, भारत और यूरोप, भारत के अंतरराष्ट्रीय संबंधों की ऐतिहासकिता, भारतीय परंपरा में समाज और राज-व्यवस्था, औपनविशकिता से मुक्ति और भारतीय स्वतंत्र, भारतवर्ष की सामाजकि संरचना, अंतरसंबंध और सामुदायकि संस्कृतयिों, भारत की पंचायती व्यवस्था का इतिहास, भारत की जनपदीय शकिषा प्रणाली, पशुचारक-संस्कृति (गोधन संस्कृति) और भारतीय अर्थतंत्र, घुमंतु (वमुक्ति एवं अरद्ध घुमंतु) समुदायों की जीवन-संस्कृति आदि विषयिे शामिल हैं।
- सात जूनयिर फ़ैलोशिपि के लयिे आमंत्रति प्रस्तावों में मध्य भारत की स्थानकि गाथा-आख्यान परंपराएँ और वाचकि इतिहास, मध्य भारत में वज्जिान और तकनीकी कौशल परंपराएँ, मध्य भारत का भाषा परिवार और उनकी पहचान, मध्य भारत में जातीय कौशल: कला, शलिपि, वज्जिान, मध्य भारत में स्थानीय औषधीय व वैद्यकीय ज्जिान परंपरा, मध्य भारत की देशज भैषज्य ज्जिान संपदा, राष्ट्र-नरिमाण में घुमंतु समुदायों का अवदान, मध्य भारत की अरण्यक जीवन-संस्कृति एवं धरोहर आदि विषयिे शामिल कयिे गए हैं।